बाल भारती पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा

पाठ - बस की यात्रा

लेखक : हरिशंकर परसाई

BBPS PITAMPURA

निर्देश :-

1. बस की यात्रा पाठ का अध्ययन करने के लिए निम्नलिखित लिंक का प्रयोग कीजिए

   http://ncertbooks.prashanthellina.com/class_8.Hindi.Vasant/Ch-3.pdf

   https://www.youtube.com/watch?v=qGaZoV19t9k

2. विदयार्थी पाठ की सहायता से समस्त कार्य हिंदी की अभ्यास पुस्तिका में करेंगे

पाठ प्रवेश:-

वे इस लेख के द्वारा, अपने व्यक्तिगत अनुभव का बखान करते हैं जोकि है "बस की यात्रा।" वे एक बार बस के द्वारा यात्रा करते हैं और किस तरह की परेशानियाँ इस यात्रा में आती हैं, इस सब का अनुभव इस रचना के द्वारा दर्शाया गया है।
एक बार लेखक बस से पन्ना को जा रहे थे बस बहुत ही पुरानी थी जैसा कि दर्शाया गया है इस सफर में क्या-क्या अनुभाव किया, क्या-क्या उनके साथ घटा, और उन्होंने परिवहन निगम की जो बसें होती हैं उनकी हालत पर व्यंग्य किया है और ये भी दर्शाया गया है कि किस तरह से वे अपनी बसों की देख-भाल नहीं करते हैं । तो आइए हम भी चलते हैं उनकी इस यात्रा पर।

पाठ का सार:-

एक बार लेखक अपने चार मित्रों के साथ बस से जबलपुर जाने वाली ट्रेन पकड़ने के लिए अपनी यात्रा बस से शुरु करने का फैसला लेते हैं। परन्तु कुछ लोग उसे इस बस से सफर न करने की सलाह देते हैं। उनकी सलाह न मानते हुए, वे उसी बस से जाते हैं किन्तु बस की हालत देखकर लेखक हंसी में कहते हैं कि बस पूजा के योग्य है।

नाजुक हालत देखकर लेखक की आँखों में बस के प्रति श्रद्धा के भाव आ जाते हैं। इंजन के स्टार्ट होते ही ऐसा लगता है की पूरी बस ही इंजन हो। सीट पर बैठ कर वह सोचता है वह सीट पर बैठा है या सीट उसपर। बस को देखकर वह कहता है ये बस जरूर गाँधी जी के असहयोग आंदोलन के समय की है क्योंकि बस के सारे पुर्जे एक-दूसरे को असहयोग कर रहे थे।

कुछ समय की यात्रा के बाद बस रुक गई और पता चला कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है। ऐसी दशा देखकर वह सोचने लगा न जाने कब ब्रेक फेल हो जाए या स्टेयरिंग टूट जाए।आगे पेड़ और झील को देख कर सोचता है न जाने कब टकरा जाए या गोता लगा ले।अचानक बस फिर रुक जाती है। आत्मग्लानि से मनभर उठता है और विचार आता है कि क्यों इस वृद्धा पर सवार हो गए।

इंजन ठीक हो जाने पर बस फिर चल पड़ती है किन्तु इस बार और धीरे चलती है।आगे पुलिया पर पहुँचते ही टायर पंचर हो जाता है। अब तो सब यात्री समय पर पहुँचने की उम्मीद छोड़ देते है तथा चिंता मुक्त होने के लिए हँसी-मजाक करने लगते है।अंत में लेखक डर का त्याग कर आनंद उठाने का प्रयास करते हैं तथा स्वयं को उस बस का एक हिस्सा स्वीकार कर सारे भय मन से निकाल देते हैं।

BBPS PITAMPURA

शब्दार्थ:-

हाज़िर:उपस्थित
सफ़र:यात्रा
डाकिन: डराने वाली
उमड़:जमा होना
वृद्धावस्था: बुढ़ापा
कष्ट: परेशानी
सवार: चढ़ा

हिस्सेदार: साझेदार
गज़ब: आश्चर्य

विश्वसनीय (भरोसे वाली)

विदा: आखिरी सलाम
रकं: गरीब
कूच करने: जाना
निमित्त: कारण

फौरन: तुरंत
सरक: खिसक

सविनय अवज्ञा आंदोलनों: गाँधी जी द्वारा चलाया गया 1921 का आंदोलन
ट्रेनिग: सीख
दौर: ज़माने
गुजर: चल

असहयोग: साथ न देना
भेदभाव: अंतर

उम्मीद: आस

रफ़्तार: गति
भरोसा: विश्वास

BBPS PITAMPURA

लुभावने: सुन्दर
गोता: डुबकी

क्षीण: कमज़ोर
वृक्षों: पेड़
दयनीय: बेचारी
वृद्धा: बूढी
ग्लानि: खेद
प्राणांत: मरना
अंत्येष्टि: अंतिम क्रिया

ज्योति: रोशनी
टटोलकर: ढूंढकर
रेंग: धीरे-धीरे

फिस्स: एक प्रकार की ध्वनि
थम: रुक
श्रद्धाभाव: सम्मान के साथ
जान हथेली पर लेकर: बहुत खतरा लेना
उत्सर्ग: बलिदान
दुर्लभ: जो कम मिलता हो

BBPS PITAMPURA

निम्नलिखित प्रश्नो का उत्तर निर्देशानुसार दीजिए:-

प्रश्न संख्या :- १ से ७ (१ शब्द /१ वाक्य)

प्रश्न-1 लेखक को क्या देखकर लगा कि बस इसमें गोता लगाएगी?

प्रश्न-2 लेखक ने बस को कैसी अवस्था में बताया?

प्रश्न-3 लेखक और उसके मित्र कुल कितने सदस्य थे, जिन्हें बस की यात्रा करनी थी?

प्रश्न-4 पाठ 'बस की यात्रा' के लेखक कौन हैं?

प्रश्न-5 शब्दों के अर्थ बताइए – रंक , निमित्त , प्राणांत, उत्सर्ग, अंत्येष्टि

प्रश्न-6 पहली बार बस किस कारण रुकी?

प्रश्न-7 कंपनी के हिस्सेदार ने बस के लिए क्या कहा?

BBPS PITAMPURA